पर्यटन विशेषांक

सिकंदराबाद दर्पण

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

त्रैमासिक ई-पत्रिका (जनवरी-2025 - मार्च-2025) अंक-IV

राजभाषा विभाग

सिकंदराबाद मंडल

संरक्षक

श्री भरतेश कुमार जैन,
मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री आर गोपाल कृष्णन,
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रचा)

संपादक

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

सहयोग

श्री प्रणय कुमार सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक

संपादकीय संपर्क

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
सिकंदराबाद, (द.म.रे),
500003
दूरभाष: 88112
ई.मेल:srascrsc@gmail.com

संपादक के कलम से ...

प्रिय रेलकर्मियों,

आपका स्वागत है हमारे पर्यटन विशेषांक में! इस विशेषांक में, हम आपको सिकंदराबाद मंडल के विविध और मोहक पर्यटन स्थलों की रोमांचक यात्रा पर ले चलेंगे. भारत, विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश होने के नाते, अपनी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए जाना जाता है. यहां के प्रत्येक स्थान की एक अनुपम कहानी, इतिहास, और प्राकृतिक सुंदरता छिपी है.

सिकंदराबाद मंडल द्वारा प्रकाशित सिकंदराबाद दर्पण ई-पत्रिका के इस अंक को "पर्यटन विशेषांक" के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए सुखद अनुभव हो रहा है.

साहित्य, कला, संस्कृति आदि के क्षेत्र में निरंतर रचनशीलता, गतिशील समाज, संस्थाओं एवं संगठनों का सूचक है. भाषा का ज्ञान और अभिव्यक्ति की क्षमता एक दूसरे की पूरक हैं.

इस विशेषांक में हम आपको सिकंदराबाद मंडल की अद्वितीय यात्रा पर ले जाएंगे. इसमें हम आपको विभिन्न स्थलों, अनुभवों और जानकारी से अवगत कराएंगे. इस यात्रा में हमारे साथ जुड़ें और सिकंदराबाद मंडल के अद्भुत पर्यटन स्थलों का आनंद लें.

हम सब को आज के इस भाग-दौड़ के माहौल में पर्यटन के लिए जाना तो संभव नहीं है, लेकिन हमारा यह प्रयास है कि आप इसे पढ़कर ही यह अनुभूति करें कि वास्तव में आप पर्यटन पर गए हों और आप अपना रुटीन कार्य द्विगुणित उत्साह और नयी उमंग के साथ कर सकें.

आशा है आपको हमारा यह प्रयास पसंद आएगा. इसके बारे में आप अपने विचारों से हमें लाभान्वित करने का कष्ट करें. हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा.

शुभकामनाओं सहित,

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद

*** पर्यटन का महत्व ***

प्रिय साथियों,

हम एक स्थान पर रहते-रहते और एक तरह का काम करते- करते ऊब जाते हैं. हमारी इच्छा होती है कि हम दूसरे स्थानों पर जाएँ और वहाँ घूम-फिरकर मनोरंजन करें. 'पर्यटन' का शाब्दिक अर्थ होता है-घूमना-फिरना, इधर-उधर भ्रमण करना, यात्रा करना. पर्यटन शिक्षा के लिए बहुत आवश्यक है .

पर्यटन से ज्ञान-प्राप्ति के साथ मनोरंजन की भी प्राप्ति होती है. मनोरंजन से शरीर और मन दोनो स्वस्थ रहते हैं. पर्यटन के समय व्यक्ति कुछ समय के लिए ही सही, घर-परिवार की चिंताओं से मुक्त होकर आत्मिक विकास के शुभ अवसर प्राप्त करते हैं. हम विभिन्न जातियों, वर्णों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के प्रत्यक्ष संपर्क में आते हैं. पर्यटन से देश की प्रगति में निम्नप्रकार के लाभ है.

1. आर्थिक संवृद्धि:- पर्यटन से स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है.

2. रोजगार सृजन:- पर्यटन से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं.

3. संस्कृति विनिमय:- पर्यटक विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं .
4. स्थानीय व्यवसायों को समर्थन:- स्थानीय व्यवसाय जैसे होटल, रेस्टोरेंट, दुकानों आदि को पर्यटन से लाभ मिलता है.
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार:- पर्यटन से विभिन्न देशों के बीच समझ और आपसी सहयोग में सुधार होता है.

6. स्थानीय कला और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन : - पर्यटन से स्थानीय कला और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन मिलता है और उन्हें वैश्विक पहचान मिलती है.
7. पर्यावरण जागरूकता:-पर्यटकों के माध्यम से पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ती है.

8. व्यक्तिगत विकास:- पर्यटन से व्यक्ति नई चीजें सीखते हैं, दृष्टिकोण बदलता है और अनुभव समृद्ध होता है.

किंतु हम सभी रेलकर्मियों के लिए इस अनुभव का आंनद लेना संभव नही होता. इस समस्या के समाधान के लिए इस ई- पत्रिका के माध्यम से आपको सिकंदराबाद मंडल पर स्थित पौराणिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों की सैर कराने का प्रयत्न किया जा रहा है किंतु समय मिलने पर इन स्थलों पर आप अवश्य जाएं और वास्तविक आंनद लें.

><><><

सिकंदराबाद मंडल में स्थित पर्यटन स्थल

फलकनुमा पैलेस:

फलकनुमा पैलेस भारत में स्थित हैदराबाद के प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों में से एक है. यह हैदराबाद स्टेट से संबंध रखता है, जिस पर बाद में निजामों द्वारा अधिपत्य किया गया. यह फलकनुमा में 32 एकड़ क्षेत्र पर बना हुआ है. इसका निर्माण नवाव वकार उल उमर द्वारा किया गया था जो कि हैदराबाद के प्रधानमंत्री थे. फलकनुमा का तात्पर्य होता है– "आसमान की तरह" अथवा "आसमान का आइना'.

इस महल की रचना एक अंग्रेजी शिल्पकार ने 3 मार्च 1884 को शुरू की. इस निर्माण को पूरा होने में कुल 9 वर्ष का समय लगा. इसका निर्माण पूर्णतया इटेलि-यन पत्थर से हुआ है. सन् 2000 तक यह पैलेस निजाम के परिवार की निजी संपत्ति थी तथा सामान्य जनता के लिए आम रूप से खुली नहीं थी. इस पैलेस में बिलियडर्स रूम भी है. जिसे कि बोरो और वाट्स ने डिजाईन किया था. इसमें स्थित टेबल अपने आप में अद्भूत है, क्योंकि ऐसे दो टेबलों का निर्माण किया गया था जिनमें से एक वकिंघम पैलेस में है तथा दूसरा यहां स्थित है.

सन् 2000 में ताज होटल ने इस पैलेस को पुन: नवीकृत किया. नए बदलाओं के साथ इस होटल को नवंबर 2010 में अथितियों के लिए खोल दिया गया. इसके कमरों और दीवारों को फ्रांस से मंगाए गए ओर्नेट फ़र्नीचर, हाथ से काम किए गए सामानों में से तथा ब्रोकेट से सुसज्जित किया गया. इस पैलेस में 101 सीटों वाला भोजन गृह जिसे कि संसार का सबसे बड़ा डाइनिंग हॉल माना जाता है, साथ ही साथ दरबार हॉल भी है जिसे विश्वस्तरीय शिल्प का अनुप्रयोग करके सुसज्जित किया गया है.

फलकनुमा पैलेस का दृश्य

गोलकोंडा किला

यह किला तेलंगाना के प्राचीन गौरव का प्रतीक है. इसका इतिहास काफी रोचक है. गोलकोंडा किले को आरंभ में शेफर्ड हिल (तेलुगु में गोल्ल कोंडा) कहा जाता था. किंवदंती के अनुसार, इस चट्टानी पहाड़ी पर एक चरवाहा लड़का एक मूर्ति के पास आया. इस पवित्र स्थान के चारों ओर मिट्टी के किले का निर्माण करने वाले शासक काकतीय राजा को इस बात की जानकारी दी गयी.

200 साल बाद, बहमनी शासकों ने इस किले पर कब्ज़ा कर लिया. बहमनी सल्तनत के तहत गोलकोंडा का महत्व बढ़ गया. बहमनियों द्वारा सुल्तान कुली-कुतुब-उल-मुल्क (1487-1543) को गोलकोंडा के गवर्नर के रूप में भेजा. इस अवधि के दौरान बहमनी शासन धीरे-धीरे कमजोर हो गया और सुल्तान कुली (कुली कुतुब शाह अवधि) औपचारिक रूप से 1518 में स्वतंत्र हुआ, जिसने गोलकोंडा में स्थित कुतुब शाही राजवंश की स्थापना की. 62 वर्षों की अवधि के बाद, पहले तीन कुतुब शाही सुल्तानों द्वारा मिट्टी के किले का वर्तमान संरचना में विस्तार किया गया, जो लगभग 5 कि.मी. (3.1 मी.) की परिधि में लगभग 5 कि.मी. (3.1 मील) तक फैले ग्रेनाइट का एक विशाल दुर्ग है. 1950 तक यह कुतुब शाही राजवंश की राजधानी बना रहा, जिसके बाद उसे हैदराबाद में स्थानांतरित किया गया. कुतुब शाहियों ने किले का विस्तार किया, जिसकी 7 कि.मी. (4.3 मील) की बाहरी दीवार ने शहर को घेर लिया है. 1687 में आठ महीने की लंबी घेराबंदी के बाद अंतत: मुगल सम्राट औरंगजेब के हाथों यह किला बरबाद हो गया.
कहा जाता है कि विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर का हिरा गोलकोंडा की खदानों में ही पाया गया था.

आजकल यहां लाइट एंड साउंड शो कार्यक्रम प्रदर्शित किया जा रहा है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है.

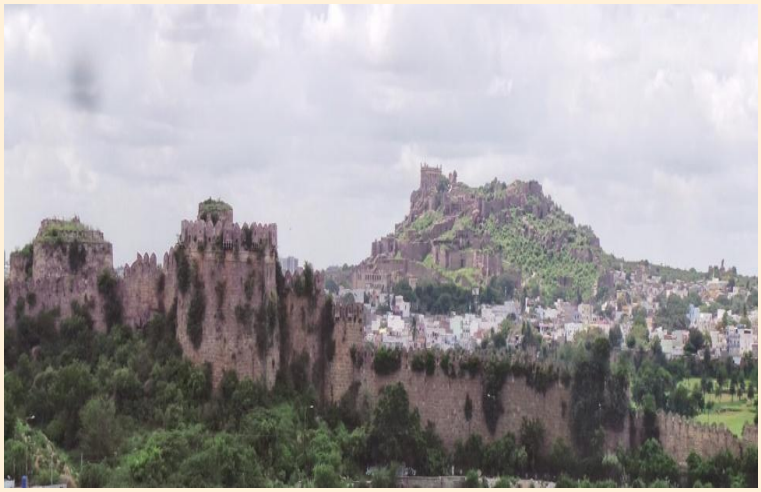

गोलकोंडा किले का आंतरिक दृश्य

लाइट एंड साउंड शो का दृश्य

चारमीनार

हैदराबाद की शान और पहचान चारमीनार से है. हैदराबाद के पुराने शहर को उसके सेंटर पीस के रूप में चारमीनार के साथ डिजाइन किया गया था. चारमीनार की चारों दिशाओं में शहर फैला हुआ था, जो स्थापित बस्तियों के अनुसार अलग-अलग थे. चारमीनार के उत्तर की ओर चार कमान या चार द्वार हैं, जो मुख्य दिशा में निर्मित हैं. शहर की योजना को विकसित करने के लिए प्रतिष्ठित फारसी वास्तुकारों को भी आमंत्रित किया गया था. इमारत का निर्माण उसे मस्जिद और मदरसा के रूप में उपयोग करने के उद्देश्य से किया गया था. यह इंडो-इस्लामिक वास्तुकला शैली का है. कहा जाता है कि चारमीनार का एक नमूना वास्तविक निर्माण से पहले डबीरपुरा/नागरबोली कब्रिस्तान में बनाया गया था.

इतिहासकार मसूद हुसैन खान का कहना है कि चारमीनार का निर्माण वर्ष 1592 में पूरा हुआ था. यह लोकोक्ति है कि हैदराबाद शहर में तत्कालिन हुए प्लेग की बीमारी के उन्मूलन के स्मारक के रूप में इसका निर्माण किया गया. सन 1687 में औरंगजेब ने इसे ध्वस्त करने का निर्णय लिया, किंतु इस पर बनी मस्जिद को ध्यान में रखते हुए उसने अपना फैसला बदल दिया. इसके उत्तर की दिशा में हैदराबाद नगर के चारों ओर से आनेवाले जन समूहों के लिए गुलजार हाउस बनाया और इस वास्तुकला का यह परिसह कई वर्षों से पर्यटकों का केंद्र बन गया है.

चारमीनार के दक्षिण पश्चिम इलाके में मक्का मस्जिद बनी है. यह कहा जाता है कि इस मस्जिद के एक पत्थर को मक्का ले गया है. चारमीनार के दक्षिण पूर्वी छोर पर भग्यलक्ष्मी मंदिर है. इस भाग्यलक्ष्मी देवी के नाम पर हैदराबाद का नाम भाग्यनगर पड़ा.

चारमीनार की घड़ी

चारमीनार की एक मीनार

हुसैन सागर झील एवं भगवान बुद्ध की प्रतिमा

एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झील के रूप में प्रसिद्ध, हुसैन सागर झील हैदराबाद में स्थित सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से एक है. मुसी नदी की एक सहायक नदी पर स्थित इस सुरम्य झील को टैंक बुंद भी कहा जाता है. अपने अद्वितीय हृदय-आकार की रूपरेखा के कारण, हुसैन सागर झील को संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) द्वारा 'हार्ट ऑफ़ द वर्ल्ड' भी घोषित किया गया है. इस झील के आकर्षण में 3 किमी लंबी बांध की दीवार भी है जो हैदराबाद और सिकंदराबाद जुड़वां शहरों को जोड़ती है.

हैदराबाद की हुसैन सागर झील खूबसूरती का खास नमूना है और इस झील में स्थित बुद्ध की विशाल मूर्ति इसमें और चार चांद लगा देती है. हुसैन सागर बुद्ध प्रतिमा दक्षिण भारत के वर्तमान राज्य तेलंगाना के हैदराबाद में स्थित है. यह प्रतिमा हुसैन सागर द्वीप में लुम्बिनी पार्क में स्थित है.

बुद्ध की 18 - मीटर ऊंची अखंड ग्रेनाइट प्रतिमा हुसैन सागर झील के मुख्य आकर्षणों में से एक है. संयुक्त आंध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री नंदमूरी तारक रामा राव द्वारा 1985 में बुद्ध पूर्मिमा परियोजना के भाग के रूप में इसकी कल्पना की गयी. इस मूर्ति को एक सफेद ग्रेनाइट चट्टान से तराशा गया था, जिसका वजन 450 टन था. दो वर्ष तक 200 से अधिक शिल्पकारों ने इसे तराशा.

यह प्रतिमा देखने में जितनी सुंदर, सरल और सुरक्षित प्रतीत होती है, इसका निर्माण वास्तव में उतना ही कठिन कार्य था. न्यूयॉर्क यात्रा पर जाने के बाद स्टैचू ऑफ लिबर्टी की सुंदरता से प्रभावित हो कर श्री नंदमूरी तारक रामा राव के मन में इस प्रतिमा को स्थापित करने का विचार आया. एक लंबी खोज के बाद हैदराबाद के बाहर 40 मील की दूरी पर नलगोंडा के पास एक ठोस सफेद ग्रेनाइट चट्टान की खोज के बाद काम शुरू हुआ. अक्तूबर 1985 में श्री एन.टी.रामा राव ने संरचना पर काम का उद्घाटन किया और अंत में 1 दिसंबर 1992 को झील के मंच पर सफलतापूर्वक मूर्ति स्थापित की गयी.

रामोजी फिल्म सिटी

रामोजी फिल्म सिटी दुनिया का सबसे बड़ा फिल्म स्टूडियो परिसर माना जाता है. यह भारत के तेलंगाना राज्य की राजधानी हैदराबाद से 25 कि.मी दूर नलगोंडा मार्ग पर स्थित है. यह स्टूडियो 2000 एकड़ में फैल हुआ है. इसकी स्थापना सन् 1996 में दक्षिण के मशहूर फिल्म निर्माता श्री रामोजी राव ने की थी. यहां एक साथ 15 से 25 फिल्मों की शूटिंग की जा सकती है. यहां फिल्म बनाने की आइडिया से लेकर पूरे फिल्म निर्माण से पोस्ट प्रॉडक्शन तक की सभी सुविधाएं एक ही जगह मौजूद है. यह प्रसिद्ध पर्यटन केंद्र बन गया है. हर साल दस लाक से भी अधिक लोग यहां आते हैं.

उषा किरण मूवीज लिमिटेड ने भारतीय फिल्मकारों की फिल्मी कल्पना के मुताबिक इस फिल्म सिटी का निर्माण किया. इसकी तुलना हॉलीवुड के मशहूर स्टुडिओज के साथ की जाती है.

रामोजी फिल्म सिटी में 500 से अधिक सेट लोकेशन हैं. सैंकडो उद्यान, पचास के करीब स्टूडियो फ्लोर, अधिकृत सेट, डिजिटल फिल्म निर्माण की सुविधाएं, आउटडोर लोकेशन, उच्च तकनीक से युक्त प्रयोगशालाएं, तकनीकी सहायता सभी मौजूद है. रामोजी फिल्म सिटी में सिर्फ भारतीय ही नहीं बल्कि फिल्म विदेशी फिल्म निर्माता भी आते हैं. यहां एक साथ बीस विदेशी फिल्म और चालीस देशी फिल्में बनाई जा सकती है.

यादाद्रि मंदिर

श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर या यादाद्रि या यादगिरिगुट्टा मंदिर को पंच नरसिंह क्षेत्रम और ऋषि आराधना क्षेत्रम के नाम से भी जाना जाता है. यह एक हिंदू मंदिर है जो भारत के तेलंगाना राज्य के यादाद्रि भुवनगिरि जिले में यादगिरिगुट्टा के छोटे से शहर में एक पहाड़ी पर स्थित है.

ऋषि ऋष्यश्रृंग और शांता देवी के पुत्र यदा महर्ष ने भगनान हनुमान के आशीर्वाद से त्रेतायुग में भुवनगिरि और यागिरि की पहाड़ियों के बीच एक गुफा में भगवान नरसिंह के लिए कठोर तपस्या की. उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान नरसिंह श्री ज्वाला नरसिंह, श्री योगानंद, श्री गंडाभरुंडा, श्री उग्र नरसिंह और श्री लक्ष्मी नरसिंह पांच रूपों में प्रकट हुए. यदा महर्षि ने भगवान से सभी पांच रूपों में गुफा में पहाड़ी पर रहने के लिए कहा.

दूसरे महाकाव्य के अनुसार भगवान श्री नारायण, ऋषि श्रृंग की तपस्या से प्रसन्न हुए और भगवान हनुमान को उन्हें उस दिशा में जाने के लिए कहा, जहां श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी रहते हैं. उस स्थान को अब यादगिरि पर्वत कहा जाता है.

यदाद्रि मंदिर का दृश्य

श्री राजराजेश्वर स्वामी मंदिर

भगवान शिव का निवास- तेलंगाना राज्य के राजन्ना सिरसिल्ला जिले के बेलुमवाड़ा गांव में प्राचीन और शिव मंदिरों में से एक है. मंदिर अपनी स्थापत्य भव्यता और आध्यात्मिक पवित्रता के संदर्भ में एक विशेष उल्लेखनीय और प्रसिद्ध शिव मंदिर है.

यहां के विराजमान देवता-भगवान राजराजेश्वर " नील लोहित शिव लिंगम" के रूप में भक्तों की इच्छाओं को पूरा करने में उनकी असीम कृपा के लिए प्रसिद्ध हैं. इस तीर्थस्थान के मुख्य मंदिर परिसर में वैष्णव मंदिर होने कारण 'दक्षिण काशी'[दक्षिणी बनारस] और "हरिहर क्षेत्र" के रूप में भी लोकप्रिय है, अर्थात् श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी और श्री सीताराम चंद्र स्वामी मंदिर.

ऐतिहासिक रूप से यह स्थान वेमुलावाड़ा चालुक्यों की राजधानी धी जिन्होंने 750 ई. से 973 ई. तक शासन किया था, तथा इस मंदिर का निर्माण 760 और 973 ई के बीच हुआ था, और हिंदु उपासकों के लिए तीर्थस्थल है इस स्थान पर रॉक कट शिलालेख पाए गए.

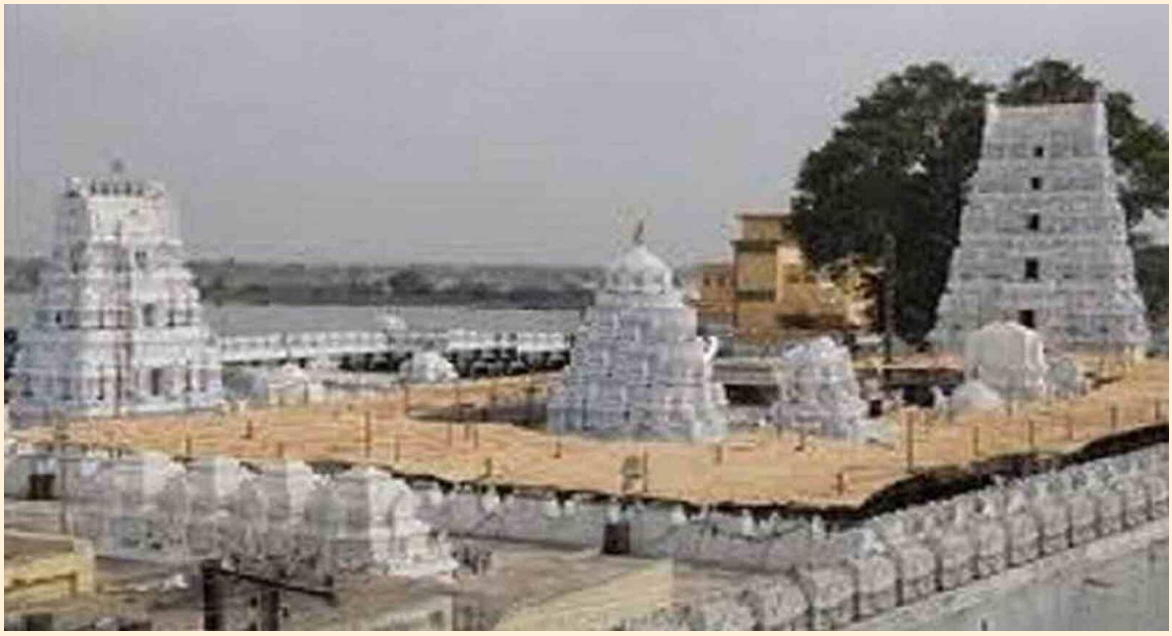

श्री राजजेश्वर स्वामी मंदिर का दृश्य

वरंगल-हजार स्तंभ मंदिर

शहर से लगभग 150 किलोमीटर (93 मील) दूर तेलंगाना राज्य में हनमकोंडा-वरंगल राजमार्ग के पास के पास अपने खंडहरों के साथ हज़ार स्तंभ मंदिर है.

रुद्रकेश्वर मंदिर जिसे स्थानीय रूप से वेयीस्थंबाला गुड़ी (हजार स्तंभ मंदिर) के रूप में जाना जाता है. काकतीय कला, वास्तुकला और मुर्तिकला के बेहतरीन और उपलब्ध उदाहरणों में से श्रेष्ठ है. इसे महाराजा रुद्र देव द्वारा बनाया गया था. 1163 ईस्वी के बाद के चालुक्य और प्रारंभिक काकतीय वास्तुकला की शैली में है. मंदिर एक हजार स्तंभों के साथ वास्तुकला और मुर्तिकला का बेहतरीन नमूना है. मंदिर के घटकों के रूप में समृद्ध नक्काशीदार खंभे, छिद्रित स्क्रीन, उत्तम चिह्न मोनोलिथिक डोलराइट नंदी हैं. सैंडबॉक्स तकनीक जैसी नींव को मजबूत करना, इस शैली की निपुणता है. काकतीय मूर्तिकारों की सरलता लेथ टर्न, और डोलराइट और ग्रेनाइट पत्थर की मूर्तिकला और नव रंगमंडप की शिल्पकला में चमकदार पॉलिश में दिखाई देती है.

मंदिर का जीर्णोद्धार 2004 में भारत सरकार द्वारा किया गया था. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और आधुनिक इंजीनियर मंदिर के आगे के जीर्णोद्धार के लिए काम कर रहे हैं. इस मंदिर को 25 जुलाई 2021 को "यूनेस्को की विश्व धरोहर" (WORLD HERITAGE SITE by UNESCO) के रूप में अंकित किया गया था.

हजार स्तंभ मंदिर का दृश्य

हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग

राजभाषा अधिनियम-1963 की धारा-3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारियों /व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं.

वरंगल-भद्रकाली मंदिर

देवी भद्रकाली मंदिर देश के प्राचीनतम मंदिरों में से एक है. माना जाता है कि मंदिर 625 ईस्वी में चालुक्य वंश के राजा पुलकेशिन द्वितीय द्वारा आंध्र देशम के वेंगी पर अपनी जीत के रूप में मंदिर की दीवार पर लिखे गए लेखों के अनुसार बनाया था. बाद में, काकतीय राजाओं ने मंदिर को अपनाया और देवी भद्रकाली को अपना कुल देवता माना. मंदिर से सटे गणपति देव द्वारा एक झील भी बनायी गयी थी. दिल्ली के मुस्लिम शासकों के हाथों काकतीय वंश के पतन के कारण मंदिर ने अपनी प्रमुखता खो दी. काकतीयों ने आक्रमण न करने के बदले में हीरे की पेशकश करके अलाउद्दीन खिलजी के साथ एक समझौता किया. उसने अपने दास और निजी विश्वासपात्र मलिक कपूर को व्यक्तिगत रूप से हीरे के परिवहन के लिए भेजा.

1950 में गुजराती बिज़नेस मैन श्री मगनलाल के साथ श्री गणेश राव शास्त्री द्वारा मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया था. भद्रकाली देवी ने सपने में मगनलाल को मंदिर का जीर्णोद्धार करने के लिए आशीर्वाद दिया.

मंदिर के आसपास के क्षेत्र में कई प्राकृतिक चट्टाने हैं जो खासतौर पर सूर्यास्त के समय सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं.

भद्रकाली मंदिर का दृश्य

परली वैजनाथ मंदिर

श्री वैजनाथ मंदिर भगवान शिव का प्राचीन मंदिर है जो महाराष्ट्र राज्य के मराठवाडा क्षेत्र के बीड़ जिले में स्थित है. यह मंदिर शिवपुराण के अंतर्गत वर्णित द्वादश ज्योतिर्लिंगों में भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है .इस मंदिर के परिसर में नारद जी, शनिदेव और अद्वैत सिद्धांत के प्रणेता श्री आदि शंकराचार्य के मंदिर भी हैं.

वर्तमान मंदिर का जीर्णोद्धार, इंदौर की शिवभक्त महारानी देवी अहिल्याबाई होलकर ने अठारहवीं सदी में करवाया था. अहिल्या देवी को यह तीर्थ स्थान बहुत प्रिय था. यह मंदिर समुद्री तल से 75 से 80 फीट की ऊंचाई पर स्थित है.

यह भव्य तथा सुंदर मंदिर पर्वत की ढ़लान पर पत्थरों से बना है. इस मंदिर तक पहुंचने के लिए तीन दिशाएं तथा प्रवेश के तीन द्वार हैं. यह मंदिर गांव के बाहरी इलाके में है. कहते हैं कि इंदौर की महारानी पुण्यश्लोक अहिल्या बाई होलकर को इस मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए अपनी पसंद का पत्थर प्राप्त करने में कठिनाई हो रही थी. तो उन्हें अपने सपने में उस पत्थर की जानकारी मिली कि वह समीप ही स्थित त्रिशाला देवी पर्वत पर उपलब्ध है. इस प्रकार इस मंदिर की कल्पना की गयी और इस प्रकार यह उपासना का एक महत्वपूर्ण स्थल बन गया.

परली वैजनाथ मंदिर का दृश्य

अनंतगिरि हिल्स

अनंतगिरि हिल्स विकाराबाद से 10 कि.मी. और हैदराबाद से लगभग 90 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. यह तेलंगाना क्षेत्र के घने जंगलों में से एक है. अनंतगिरि में श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी का प्रसिद्ध मंदिर है. यह माना जाता है कि श्री अनंत पद्मनाभ स्वामी की खड़ी स्थिति में स्वयंभू मूर्ति है. यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है.

यह मुसी नदी का जन्म स्थान भी है. यह स्थान ट्रेकिंग के लिए और रोमांच प्रिय पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है. हैदराबाद के बाहर साप्ताहिक छुट्टी मनाने के लिए यह सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है. इस पहाड़ी पर छोटी-छोटी गुफाएं हैं और एक छोटा सा तालाब भी हैं, जहां बहुत कछुए पाए जाते हैं. मंदिर के आगे लगभग 1.5 कि.मी की दूरी पर एक झरना (वॉटरफॉल) है.

श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर

यह जगह हरियाली, ठंडी हवा और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है जिसके कारण फोटो शूट के लिए अत्यंत लोकप्रिय है.

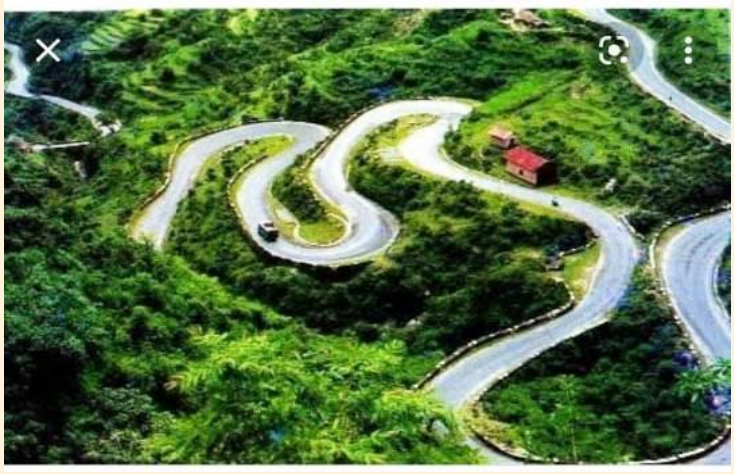

अनंतगिरि हिल्स का प्राकृतिक सौंदर्य

सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां

चर्लापल्ली नए रेलवे टर्मिनल का उद्घाटन

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने दिनांक 06.01.25 को नई दिल्ली से अत्याधुनिक तकनीक से निर्मित सुविधा वाले चर्लापल्ली नए रेलवे टर्मिनट का वर्चुअल उद्घाटन किया. इस कार्यक्रम में तेलंगाना के माननीय राज्यपाल श्री जीष्णु देव वर्मा, अन्य केंद्रिय और राज्य के गणमान्य व्यक्तियों के साथ-साथ महाप्रबंधक/द.म.रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारियों ने भाग लिया.

इस नए टर्मिनस में आउटर रिंग रोड (ओआरआर) से जुड़कर क्षेत्रीय विकास को गति देने की क्षमता है. यह यात्रियों को अतिरिक्त गाड़ी सुविधा उपलब्ध करेगा और सिकंदराबाद/हैदराबाद रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ को भी कम करेगा.

वर्ष 2023-24 के लिए दक्षता शील्ड

सिकंदराबाद मंडल ने महाप्रबंधक दक्षता शील्ड (विजयवाडा मंडल के साथ संयुक्त रूप से 2023-24 के लिए दक्षिण मध्य रेलवे में सर्वश्रेष्ठ मंडल के लिए) प्राप्त किया है. कुल मिलाकर, सिकंदराबाद मंडल ने 14 शील्ड प्राप्त किया.

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2025 को मंडल रेल प्रबंधक श्री भरतेश कुमार जैन ने वर्कशॉप और लोको रेलवे ग्राउंड में 76वां गणतंत्र दिवस मनाया गया और रेलवे सुरक्षा बल, स्काउट्स और गाइड्स की विभिन्न टुकड़ियों द्वारा प्रस्तुत गार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त किया.

महाप्रबंधक/दक्षिण मध्य रेलवे का वाडी-तांडूर-विकाराबाद-सिकंदराबाद सेक्शन का वार्षिक संरक्षा निरीक्षण

अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतराष्ट्रीय रूप होगा, जिसे इंडो-अरेबिक यानि 1.2.3.4.5..0 के रूप में जाना जाता है.

रेल सेवा पुरस्कार

सिकंदराबाद मंडल ने 27 फरवरी, 2025 को रेल कलारंग, न्यू भोईगुडा, सिकंदराबाद में 69वां रेलवे सप्ताह मनाया. इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक, सिकंदराबाद मुख्य अतिथि थे और उन्होंने कार्यक्रम के दौरान 69 कर्मचारियों/अधिकारियों को व्यक्तिगत रेल सेवा पुरस्कार प्रदान किए. इस अवसर पर मुख्य परियोजना प्रबंधक/सामान्य, अमरैप्र/प्रचा, अमरैप्र/इंफ्रा, एवं अन्य शाखा अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे.

स्टेशनों का निरीक्षण, एबीएसएस स्टेशन पर चल रहे कार्यों की प्रगति, कर्मचारियों को दिए जाने भोजन की स्वच्छता की जांच, वृक्षारोपण, समपार फाटक सं.12 ई का निरीक्षण

स्वास्थ्य जांच शिविर

मंडल में 13 स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए गए. 774 लाभार्थियों ने इस सेवा का लाभ उठाया. इस प्रकार इस वर्ष कुल 174 स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किए गए और 5187 लाभार्थियों ने इसका लाभ उठाया.

अमृत भारत स्टेशन योजना के फेज-I कार्य अंतर्गत श्री जी किशन रेड्डी, माननीय कोयला और खान मंत्री, भारत सरकार द्वारा बेगमपेट रेलवे स्टेशन का निरीक्षण

श्री जी किशन रेड्डी, माननीय कोयला और खान मंत्री, भारत सरकार ने अमृत भारत स्टेशन योजना के फेज-I कार्य के अंतर्गत पुनर्विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने के लिए 15 मार्च 2025 को बेगमपेट रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया. उनके साथ श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर), मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद और अन्य वरिष्ठ रेलवे अधिकारी भी थे. निरीक्षण के दौरान, माननीय मंत्री ने चल रहे बुनियादी ढांचे में वृद्धि, यात्री सुविधा में सुधार और समग्र स्टेशन आधुनिकीकरण प्रयासों का आकलन किया.

प्रेम चंद एवं मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना

रेल मंत्रालय द्वारा रेल कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा और अभिरूचि को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी में कहानी, उपन्यास नाटक एवं अन्य गद्य साहित्य के लिए मुंशी 'प्रेमचंद्र पुरस्कार' और काव्य गजल संग्रह के लिए मैथलीशरण गुप्त पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिसमें प्रथम पुरस्कार के लिए 20000, द्वितीय पुरस्कार के लिए 10000 और तृतीय पुरस्कार के लिए 7000 प्रदान किया जाता है.

श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद एवं अन्य अधिकारियों के द्वारा काजीपेट स्टेशन परिसर क्षेत्र, स्टेशन प्रबंधक कार्यालय, कर्मीदल लॉबी, एवं अन्य सुरक्षा पहलुओं का निरीक्षण करते हुए.

महाप्रबंधक/दक्षिण मध्य रेलवे के द्वारा सिकंदराबाद में अपग्रेडेड एल-5 पिट लाइन का उद्घाटन

श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक /दक्षिण मध्य रेलवे ने 26 मार्च 2025 को मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के लोअर यार्ड में अपग्रेडेड पिट लाइन नंबर 5 का उद्घाटन किया. यह अत्याधुनिक कोच रखरखाव सुविधा रेल सेवाओं को बढ़ाने, बेहतर दक्षता और यात्री सुविधा सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है.

सुविचार

मनुष्य जितना अपने अंदर से करुणा, दयालुता और प्रेम से भरा होगा, वह संसार को भी उसी तरह पायेगा.

:– स्वामी विवेकानंद

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस -2025

सिकंदराबाद मंडल ने 8 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - 2025 को भव्यता के साथ मनाया. इस कार्यक्रम का उद्घाटन दक्षिण मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन/सिकंदराबाद की अध्यक्षता श्रीमती मालिनी जैन और मंडल रेल प्रबंधक (मंरेप्र)/सिकंदराबाद ने दीप प्रज्वलित करके किया.

इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की 75 महिला विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया था। इस कार्यक्रम में महिलाओं की उपलब्धियों को मान्यता दी गई और समुदाय और एकजुटता की भावना को बढ़ावा दिया गया.

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस का दृश्य

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता.
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्रफला: क्रिया.
जहां पर महिलाओं को सम्मान मिलता है, वहां देवता निवास करते हैं. जहां पर ऐसा नहीं होता है वहां पर सभी कार्य निष्फल होते हैं.

राजभाषा विभाग, सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित गतिविधियां

दिनांक 28.01.2025 को विद्युत लोको शेड, लालागुड़ा में हिंदी उपसमिति की बैठक, कार्यशाला एवं जयशंकर प्रसाद जयंती का आयोजन.

दिनांक 16.01.2025 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला

दिनांक 05.02.2025 को आरओएच/रामगुंडम में हिंदी तकनीकी सेमिनार का आयोजन

दि. 24.02.25 को हवा महल, में हिंदी कार्यान्वयन लिपिक व पुस्तकपालों की बैठक

कर्मचारियों को कुंजीयन प्रशिक्षण देते हुए

राजभाषा नियम राजभाषा नियम 1976 के अनुसार क,ख, ग, क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य एवं संघ शासित प्रदेश		आइए हिंदी सीखें
'क'	बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश , छत्तीसगढ, उत्तराखंड, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, अंडमान और निकोबार, द्विप समूह.	Cadre - संवर्ग
		Certificate - प्रमाणपत्र
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडिगढ़, दमन और दीव तथा दादर और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र.	Confidential - गोपनीय
		Forwarded - अग्रेषित
'ग'	ओड़िसा, बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मेघालय, मणिपुर, सिक्किम, त्रिपुरा, मिजोरम, तमिलनाडु, गोवा, तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल, जम्मू व काश्मीर, लक्षद्वीप और पांडिचेरी.	Implementation- कार्यान्वयन
		Incredible - अविश्वसनीय
		Procedure - प्रक्रिया
❖ हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है. :---		 मैथिलीशरण गुप्त

"यह समाचार पत्रिका सिकंदराबाद मंडल की गतिविधियों को राजभाषा में साझा करने हेतु प्रकाशित की जा रही है".